

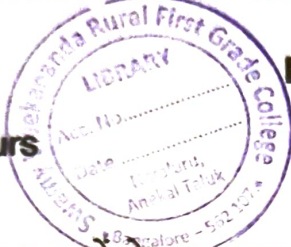
II Semester B.C.A./B.Sc. (FAD) Examination, June/July 2026

(SEP 2024 - 25)

HINDI LANGUAGE - II

Time : 3 Hours

Max. Marks : 80



I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक शब्द या वाक्य में उत्तर लिखिए :

(10×1=10)

- 1) कबीरदास के शरीर में किसका वास है ?
- 2) तुलसीदास के अनुसार शरीर क्या है ?
- 3) श्री कृष्ण की मूरली किसकी तरह दिखती है ?
- 4) मातृभूमि का वस्त्र किसे कहा गया है ?
- 5) मातृभूमि का जल किसके समान बताया गया है ?
- 6) जो व्यक्ति आज का कार्य आज ही करता है, उसे क्या कहते हैं ?
- 7) पंथ होने दो अपरिचित कवयित्री का नाम लिखिए ।
- 8) 'टूटा पहिया' कविता में कवि अपने आपको किससे तुलना करता है ?
- 9) तारों के टूटने पर अम्बर क्या नहीं करता है ?

(10) मिट्टी की सादगी की तुलना किससे की गई है ?

II. निम्नलिखित पद्यांशों में से किन्हीं दो का ससंदर्भ व्याख्या कीजिए :

(2×7=14)

1) जैसे माया मन रमै, तैसो नाम रमाय ।

तारा मंडल बेधिकै, तब अमरापुर जाय ॥

2) निर्मल तेरा नीर अमृत के से उत्तम है ।

शीतल मंद सुगंध पतन हर लेता श्रम है ॥

षट्क्रतुओं का विविध दृश्ययुत अद्भुत क्रम है ।

हरियाली का फर्श नहीं मखमल से कम है ॥



- 3) जीवन में वह था एक कुसुम, थे उसपर नित्य निछावर तुम
वह सूख गया तो सूख गया, मधुवन की छाती को देखो ।
सूखी कितनी इसकी कलियाँ, मुझाई कितनी बल्लरियाँ
जो मुझाई फिर कहाँ खिली, पर बोलो सूखे फूलों पर
कब मधुवन शोर मचाता है, जो बीत गई सो बात गई ॥

III. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो का उत्तर लिखिए : (2×15=30)

- 1) 'टूटा पहिया' कविता में टूटा पहिया कहता है कि मैं टूटा हुआ हूँ, लेकिन मुझे मत फेंको ।
इस कथ्य के आधार पर 'टूटा पहिया' के महत्व को अपने शब्दों में वर्णन कीजिए ।
- 2) "मनुष्य के जीवन में कोई भी वस्तु स्थाई नहीं होता । पाना-खोना, मिलना-बिछड़ना, जीवन-मृत्यु आदि एक चक्र की तरह मनुष्य के जीवन में हमेशा चलती रहती है ।"
जो बीत गयी नामक कविता के आधार पर मनुष्य के जीवन के संघर्ष को लिखिए ।
- 3) अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' द्वारा रचित कविता कर्मवीर का सारांश लिखते हुए उसकी विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ।

IV. निम्नलिखित में से किसी एक पर टिप्पणी कीजिए : (1×6=6)

- 1) मिट्टी की महिमा
- 2) मातृभूमि

V. निम्नलिखित में से किसी एक वैज्ञानिक का परिचय लिखिए : (1×10=10)

- 1) चक्रवती जी. रंगराजन
- 2) सी. एन. आर. राव

VI. संक्षेपण कीजिए :

(10×1=10)

ऋतुराज बसन्त के आगमन से ही शीत का भयंकर प्रकोप भाग गया । पतझड़ में पश्चिम के पवन ने जीर्ण-शीर्ण पन्नों को गिराकर पेड़-पौधों को स्वच्छ और निर्मल बना दिया । वृक्षों और लताओं के अंग में नूतन पत्तियों के खिलने से यौवन की मादकता छा गयी । शीतकाल के ठिठूरे अंगों में नयी फुरती उमड़ रही है तथा बसन्त के आगमन के साथ ही जैसे पुरानापन और पुरातन का प्रभाव छिप गया है । प्रकृति के कण-कण में नया जीवन का संचार हो गया है । आम के मंजरियों की गंध और कोमल का आवाज़, भँवरों का गुंजन सब ऐसा लगता है जैसे जीवन में सुख ही सुख है । यह आनन्द के एक क्षण का मूल्य पूरे जीवन को अर्पित करके भी नहीं चुकाया जा सकता है । प्रकृति ने बसन्त के आगमन पर अपने रूप को इतना संवारा है और रचा है कि उसकी शोभा का वर्णन करना असंभव है ।